Class- VIII (हिन्दी) Sub : वसंत	पाठ- 12 सुदामा चरित दिनांक- 04/12 /2021

कवि – नरोत्तमदास

व्याख्या (छात्र केवल पढ़ें व याद करें)

क) सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा ।
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा ।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा ।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा ।।

शब्दार्थ- सीस=सिर । पगा = पगड़ी । झँगा = कुरता । तन = शरीर ।
जाने को = न जाने कौन । आहि = आया । बसे = बसना ।
ग्रामा = गाँव । दुपटी = चादर । लटी = लटक रही । अरु = और ।
पाँय = पाँव । उपानह = जूता, पादुका । दुर्बल = कमज़ोर । चकिसो = चकित ।
बसुध = धरती । अभिरामा = सुंदर, मनोहर । धाम = भवन ।
दीनदयाल = श्रीकृष्ण, दीनों पर दया करनेवाले। बतावत = बताता है ।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश कवि नरोत्तमदास द्वारा रचित कविता "सुदामा चरित" से ली गई है। उन्होंने अपनी कविता में पौराणिक कथा को आधार बनाकर मित्रता के वास्तविक रूप को जनमानस के सम्मुख प्रकट किया है। यहाँ कवि ने सुदामा की दीन-हीन दशा का सुंदर शब्द-चित्र बनाया है।

व्याख्या – श्रीकृष्ण से मिलने गए गरीबी से बेहाल सुदामा को देखकर द्वारपाल ने भवन में जाकर श्रीकृष्ण से कहा – हे प्रभु! बाहर महल के द्वार पर एक निर्धन-सा व्यक्ति खड़ा है। उसके सिर पर न तो पगड़ी है और न शरीर पर कोई कुरता है। पता नहीं वह किस ग्राम से आया है। उसकी धोती फट चुकी है और उसकी चादर की दशा अत्यंत बदहाल है। उसके पैरों में जूता तक नहीं है । वह निर्धन, कमज़ोर सा ब्राह्मण हैरान होकर द्वारका की धरती की सुंदरता को आश्चर्यचकित होकर देख रहा है । वह आपका पता पूछ रहा है और अपना नाम सुदामा बता रहा है।

ख) ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए ।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए ।।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए ।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए ।।

शब्दार्थ – बेहाल = बुरा हाल । बिवाइन = पैरों की फटी एड़ियाँ । पग = पैर ।
कंटक जाल = काँटों का जाल । पुनि = बार-बार । जोए = देखना ।
सखा = मित्र । इतै = यहाँ । कितै = किधर । दीन दसा = बुरी हालत ।
करुणा = दया । करूनानिधि = दया के सागर । परात = बहुत बड़ी थाली।

छुयो = छुआ । नैनन के जल = आँसुओं से ।

व्याख्या – कवि ने सुदामा की दीन-हीन दशा का चित्रण करते हुए श्रीकृष्ण के भावों का मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है। श्रीकृष्ण ने जब सुदामा के पैरों को धोने के लिए हाथ लगाया तो देखा कि उनकी एड़ियाँ फटी हुई हैं। पैरों में काँटों का जाल बना हुआ है। यह देखकर श्रीकृष्ण विह्वल हो उठते हैं । तब उन्होंने कहा कि हे मित्र! तुम इतने दुख भोगते रहे । तुमने यहाँ आने में कितने दिन लगा दिए। सुदामा की यह हालत देखकर करुणा के सागर श्रीकृष्ण फूट-फूटकर रोने लगे । सुदामा के पैरों को धोने के लिए परात में लाया जल उन्होंने छुआ तक नहीं और अपने आँसुओं से ही सुदामा के पैरों को धोया।

ग) कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत ।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु ।।

शब्दार्थ- कछु = कुछ । काहे = क्यों नहीं । चाँपि = दबाकर । पोटरी = पोटली ।
काँख = बगल । केहि हेतु = किस कारण ।

व्याख्या- कृष्ण अपने सखा सुदामा से कहते हैं कि मित्र मेरी भाभी ने मेरे लिए कुछ-न-कुछ अवश्य दिया होगा। तुम मुझे वह क्यों नहीं दे रहे हो? तुम उस पोटली को अपनी बगल में किसलिए दबाए बैठे हो ? भाभी ने जो पोटली मेरे लिए दी है, तुम मुझे वह क्यों नहीं दे रहे हो ?

घ) आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने ।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने" ।।
पोटरी काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने ।
पछिली बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे ।।

शब्दार्थ- दए = देना । चाबि = चबाना । स्याम = श्रीकृष्ण । बान = कला ।
प्रवीने = प्रवीण, कुशल । सुधा = अमृत, प्रेम । अजौ = आज भी ।
तजो = छोड़ी । तंदुल = चावल के दाने । कीन्हे = किया ।

व्याख्या – पुरानी बात को याद करते हुए श्रीकृष्ण सुदामा से कहते हैं कि तुमने बचपन में भी इसी तरह वस्तुओं को देने में आनाकानी की थी । गुरु आश्रम में गुरुमाता ने हम दोनों को जो चने दिए थे उसे तुम अकेले ही चबा गए थे और मुझे दिए ही नहीं। कृष्ण मुसकुराते हुए कहते हैं कि चोरी की कला में तुम आज भी कुशल हो। तुम पोटली को अपनी काँख में दबाए हुए हो। अमृत रूपी प्रेम रस से भीगे उन चावल के दानों के साथ वैसा नहीं कर सकते । तुम्हें तो इसे मुझे देना ही पड़ेगा।

ङ) वह पुलकनि , वह उठि मिलनि, वह आदर की बात ।
वह पठवनी गोपाल की, कछु ना जानी जात ।।
घर-घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज ।

कहा भयो जो अब भयो, हरि को राज-समाज ।।
हौं आवत नाहीं हुतौ, वाही पठयो ठेलि ।।
अब कहिहौं समुझाय कै, बहु धन धरौ सकेलि ।।

शब्दार्थ- पुलकनी = हर्ष, आनंद से युक्त । पठवनि = विदाई ।
कर ओड़त फिरै = हाथ फैलाकर घूमना । तनक= थोड़ा । ठेलि = बलपूर्वक भेजना
धरौ सकेलि = संभालकर रखना ।

व्याख्या- इन पंक्तियों में खाली हाथ घर लौटते सुदामा की मनोस्थिति का वर्णन है। वे सोचते हैं कि मेरे आगमन पर श्रीकृष्ण कितने प्रसन्न थे। आसन से उठकर मुझसे मिले थे, स्नेह और आदर के साथ मुझसे बात की थी । लेकिन मेरी स्थिति जानने के बाद भी मुझे खाली हाथ लौटा दिया । ये वही कृष्ण हैं जो थोड़े से दही के लिए घर-घर जाकर हाथ फैलाते थे। क्या हुआ जो आज इनके पास राजपाट और सुख-सुविधाएँ हैं। मैं तो यहाँ आना ही नहीं चाहता था, लेकिन मेरी पत्नी ने जबरन मुझे यहाँ भेज दिया । ये मुझे ही धन संभालने की सीख दे रहे हैं ।

च) वैसोई राज-समाज बने, गज-बाजि घने मन संभ्रम छायो ।
कैधों परयो कहूँ मारग भूलि, कि फैरि कै मैं अब द्वारका आयो ।।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मझायो ।
पूँछत पाड़े फिरे सब सों, पर झोंपरी को कहुँ खोज न पायो ।।

शब्दार्थ- गज = हाथी । संभ्रम = भ्रमित । कैधों = या, अथवा। मारग = मार्ग ।
भौन = भवन । बिलोकिबे = देखना । लोचत = लालायित ।
गाँव मझायो = गाँव भर छान मारा ।

व्याख्या – इस पद्यांश में कवि ने सुदामा के मन के भावों और स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि जब सुदामा अपने गाँव पहुँचे तो वे हैरान रह गए । उनका सारा गाँव द्वारका जैसा बन गया है । हाथी-घोड़े उसी प्रकार घूम रहे हैं। सुदामा मन ही मन सोचते हैं कि कहीं रास्ता भूलकर वापस द्वारका तो नहीं आ गए। यह सब देखकर सुदामा का मन चिंतित हो उठता है । अपनी झोपड़ी ढूँढने के लिए वे सारा गाँव छान मारते हैं । ब्राह्मण सुदामा सभी से अपनी झोपड़ी के बारे में पूछते हैं लेकिन उन्हें अपनी झोपड़ी कहीं दिखाई नहीं पड़ती है।

छ) कै वह टूटी-सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत ।
कै पग में पनही न हती, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत ।।
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत ।
कै जुरतो नहीं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भवत ।।

शब्दार्थ- कै = किस कदर । छानी = झोंपड़ी । हती = होती थी । कंचन = सोना, स्वर्ण । सुहावत = सुंदर लगना । पग = पैर । पनही = पादुका, जूता। कहँ लै= कहाँ अब। गजराजहु = हाथी । ठाढ़े = खड़े हैं । महावत = हाथी चलाने वाला ।

जुरतो = पूरा पड़ना। कोदो सवाँ = मोटा अनाज । दाख = मेवा (काजू,किशमिश)।

व्याख्या – आगे कवि कहते हैं कि जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी झोपड़ी हुआ करती थी, आज वहाँ सोने का सुंदर महल सुशोभित है । कवि आगे कहते हैं कि जिसके पैरों मे कभी जूता तक नहीं होता था, आज उसके लिए महावत हाथी लेकर तैयार खड़े रहते हैं । जिस व्यक्ति की सारी रातें कठोर भूमि पर सोकर बीतती थी, उसे अब कोमल, मुलायम बिस्तर पर नींद नहीं आती है। पहले खाने के लिए कोदो सवाँ जैसा मोटा घटिया अनाज नहीं मिल पाता था, अब घर मेवा मिष्ठान से भरा हुआ है फिर भी वे चीजें उन्हें अच्छी नहीं लग रहीं हैं। अर्थात अब सुदामा को किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं है।

(अगले सप्ताह इसके प्रश्नोत्तर प्रकाशित किए जाएंगे। छात्र इन्हें ध्यान से पढ़ें व अर्थ याद करें।)

टीप : यह पाठ्य-सामग्री घर में ही रहकर तैयार की गई है ।